



भारतीय समकालीन चित्रकला में निरंतर बढ़ती नवतांत्रिकतावादी प्रवृत्ति

हरिनाम सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर, चित्रकला विभाग आर्मापुर पी. जी. कॉलेज कानपुर

ईमेल:singhhari1134@gmail.com

शोध संदर्भ

प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तकए भारतीय चित्रकार अपने आसपास की दुनिया को चित्रित करने के लिए विभिन्न शैलियों और तकनीकों का उपयोग करते रहे हैं। इस प्रवृत्ति के तहत चित्रकारों ने पारंपरिक शैलियों और विषयों को तोड़कर प्रयोग करना शुरू कर दिया। समकालीन भारतीय चित्रकला में यह नव-आधुनिकतावादी प्रवृत्ति लगातार बढ़ती जा रही है। आधुनिक चित्रकार नई चीजों के साथ प्रयोग कर रहे हैं और अपनी कला के माध्यम से नए विचारों और दृष्टिकोणों को व्यक्त कर रहे हैं। भारतीय समकालीन चित्रकला के जीवंत क्षेत्र में एक उल्लेखनीय और लगातार बढ़ती प्रवृत्ति अपनी उपस्थिति महसूस कर रही है। जो नव-आधुनिकतावाद के विशिष्ट हस्ताक्षर रखती है। यह परिचय भारतीय समकालीन चित्रकला में लगातार बढ़ती नव-आधुनिकतावादी प्रवृत्ति की पड़ताल करता है। इसकी उत्पत्ति विशेषताओं और भारतीय कला के लगातार विकसित हो रहे परिदृश्य पर इसके प्रभाव पर प्रकाश डालता है। आधुनिक भारतीय चित्रकला में नियोजित कला प्रवृत्ति एक प्रवृत्ति है जो अतीत के शास्त्रीय कला रूपों, शैलियों और विषयों, विशेष रूप से ऐतिहासिक और सामान्य भारतीय कला से विचार लेती है। भारत में नियोजित कलाकार अक्सर एक विशिष्ट और अत्याधुनिक आविष्कारशील अभिव्यक्ति बनाने के लिए इन शास्त्रीय कारकों को अत्याधुनिक रणनीतियों और विचारों के साथ जोड़ते हैं।

Keywords: भारतीय चित्रकला, नवतांत्रिकतावादी, आधुनिक काल, प्रवृत्ति

भारतीय चित्रकला का इतिहास एक समृद्ध और विविधतापूर्ण है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक, भारतीय चित्रकार अपने आसपास की दुनिया का चित्रण करने के लिए विभिन्न शैलियों और तकनीकों का उपयोग करते रहे हैं। आधुनिक भारतीय चित्रकला में, नवतांत्रिकतावादी प्रवृत्ति का उदय हुआ। इस प्रवृत्ति के तहत, चित्रकार पारंपरिक शैलियों और विषयों को तोड़कर नए प्रयोग करने लगे। उन्होंने पश्चिमी कला से भी प्रेरणा ली और नई तकनीकों और माध्यमों को अपनाया। समकालीन भारतीय चित्रकला में, यह नवतांत्रिकतावादी प्रवृत्ति निरंतर बढ़ती जा रही है। आधुनिक चित्रकार नए-नए प्रयोग कर रहे हैं और अपनी कला के माध्यम से नए विचारों और दृष्टिकोणों को व्यक्त कर रहे हैं।

भारतीय समकालीन चित्रकला के जीवंत क्षेत्र में, एक उल्लेखनीय और निरंतर विस्तारित प्रवृत्ति अपनी उपस्थिति महसूस कर रही है, जो नव-आधुनिकतावाद के विशिष्ट हस्ताक्षर को वहन करती है। यह कलात्मक आंदोलन हाल के वर्षों में गति पकड़ रहा है, जो समकालीन भारतीय कला के सार को प्रभावित और पुनर्परिभाषित कर रहा है। जैसे-जैसे कलाकार परंपरा और नवीनता के बीच एक गतिशील संवाद में संलग्न होते हैं, वे रचनात्मक अभिव्यक्ति के एक नए युग की शुरुआत कर रहे हैं जो आकर्षक और विचारोत्तेजक दोनों है। यह परिचय भारतीय समकालीन चित्रकला में लगातार बढ़ती नव-आधुनिकतावादी प्रवृत्ति की पड़ताल करता है, इसकी उत्पत्ति, विशेषताओं और भारतीय कला के लगातार विकसित हो रहे परिदृश्य पर इसके प्रभाव पर प्रकाश डालता है।

आधुनिक भारतीय चित्रकला में नवशास्त्रीय प्रचलन एक ऐसी प्रवृत्ति है जो अतीत के शास्त्रीय कला रूपों, शैलियों और विषयों, विशेष रूप से ऐतिहासिक और सामान्य भारतीय कला से विचार आकर्षित करती है। भारत में नियोक्लासिकल कलाकार एक विशेष और अत्याधुनिक आविष्कारशील अभिव्यक्ति बनाने के लिए अक्सर इन शास्त्रीय कारकों को अत्याधुनिक रणनीतियों और विचारों के साथ जोड़ते हैं। आधुनिक भारतीय चित्रकला में नवशास्त्रीय शैली के कुछ प्रमुख लक्षण और घटक यहां दिए गए हैं:

पारंपरिक तकनीकों का पुनरुद्धार: नियोक्लासिकल कलाकार नियमित रूप से लघु चित्रकला, भित्तिचित्र और शास्त्रीय ब्रशवर्क जैसी सामान्य चित्रकला रणनीतियों को अपनाते हैं। वे अपनी कलाकृति बनाने के लिए हर्बल रंगद्रव्य, हस्तनिर्मित कागज और सामान्य पेंटिंग उपकरण जैसे पदार्थों का भी उपयोग कर सकते हैं।

पौराणिक कथाएं और प्रतीकवाद: नवशास्त्रीय भारतीय चित्रकार नियमित रूप से भारतीय पौराणिक कथाओं, महाकाव्यों (जैसे रामायण और महाभारत) और शास्त्रीय साहित्य से विषयवस्तु की खोज करते हैं। वे अपने कार्यों में गहरे अर्थ और संदेश लाने के लिए इन आख्यानों का उपयोग करते हैं।

शास्त्रीय रूपांकनों का समावेश: कलाकार अपने चित्रों में भारतीय कला के शास्त्रीय रूपांकनों और प्रतीकों, जैसे कमल के फूल, मोर, देवी-देवताओं और विस्तृत पैटर्न को शामिल करते हैं। इन रूपांकनों की नियमित रूप से अत्याधुनिक संदर्भ में पुनर्व्याख्या की जाती है।

शैलियों का संलयन: नियोक्लासिकल कलाकार अक्सर शास्त्रीय भारतीय सौंदर्यशास्त्र को पश्चिमी कलाकृति रूपों के साथ जोड़ते हैं, जिसके परिणामस्वरूप शैलियों का संलयन होता है। यह संलयन रचनात्मक अभिव्यक्ति की व्यापक रेंज को मंजूरी देता है।

सांस्कृतिक पहचान: नियोक्लासिकल फैशन वर्तमान भारतीय कलाकारों के लिए अपनी सांस्कृतिक जड़ों से फिर से जुड़ने और अपनी कला के माध्यम से अपनी पहचान व्यक्त करने की क्षमता है। यह भारत की समृद्ध आविष्कारशील विरासत को बनाए रखने और बढ़ावा देने में मदद करता है।

समसामयिक मुद्दे: शास्त्रीय कला से सुझाव लेते हुए, नवशास्त्रीय भारतीय चित्रकार आधुनिक समस्याओं और चिंताओं से भी निपटते हैं। वे वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक या पर्यावरणीय मुद्दों पर टिप्पणी करने के लिए शास्त्रीय मुद्दों का भी उपयोग कर सकते हैं।

विविध व्याख्याएँ: भारत में नियोक्लासिकल कलाकृति अब एक अखंड आंदोलन नहीं है, और कलाकार विभिन्न तरीकों से शास्त्रीय कारकों की व्याख्या और समावेश करते हैं। परिणामस्वरूप, इस प्रवृत्ति के अंदर रचनात्मक अभिव्यक्तियों की एक विशाल विविधता है।

आधुनिक माध्यम: जबकि सामान्य रणनीतियों को नियमित रूप से अपनाया जाता है, नियोक्लासिकल कलाकार ऐंकेलिक, डिजिटल कला और संयुक्त मीडिया जैसे आधुनिक माध्यमों के साथ स्कैन करते हैं, जिससे शास्त्रीय विषयों पर वर्तमान मोड़ की अनुमति मिलती है।

उभरते कलाकार: नवशास्त्रीय प्रचलन ने उभरते भारतीय कलाकारों के बीच प्रतिष्ठा हासिल की है जो देश की आविष्कारशील विरासत का सम्मान करते हुए अपनी विशेष रचनात्मक पहचान स्थापित करना चाहते हैं।

प्रदर्शनियाँ और गैलरी: नियोजित कला भारतीय चित्रकार अक्सर भारत और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अत्याधुनिक कला दीर्घाओं और प्रदर्शनियों में अपना काम प्रदर्शित करते हैं, जिससे इस विशेष फैशन को विश्व लक्षित बाजार में लाने में मदद मिलती है।

समकालीन भारतीय चित्रकला में नवतांत्रिकतावादी प्रवृत्ति के कुछ प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित हैं:

सामग्री और तकनीकों में नवाचार: समकालीन भारतीय चित्रकार पारंपरिक सामग्री और तकनीकों से हटकर नई सामग्री और तकनीकों का उपयोग कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, कुछ चित्रकार पेंटिंग के लिए कृत्रिम सामग्री का उपयोग कर रहे हैं, जबकि अन्य कंप्यूटर और अन्य डिजिटल उपकरणों का उपयोग कर रहे हैं।

रूप और विषय में नवाचार: समकालीन भारतीय चित्रकार पारंपरिक रूपों और विषयों से हटकर नए रूपों और विषयों का प्रयोग कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, कुछ चित्रकार अमूर्त कला का निर्माण कर रहे हैं, जबकि अन्य सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों को चित्रित कर रहे हैं।

अभिव्यक्ति के नए रूप: समकालीन भारतीय चित्रकार पारंपरिक अभिव्यक्ति के रूपों से हटकर नए अभिव्यक्ति के रूपों का प्रयोग कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, कुछ चित्रकार प्रदर्शन कला और वीडियो आर्ट का उपयोग कर रहे हैं। समकालीन भारतीय चित्रकला में नवतांत्रिकतावादी प्रवृत्ति का प्रभाव भारतीय कला के विकास पर सकारात्मक रहा है। इस प्रवृत्ति ने भारतीय कला को अधिक वैश्विक और समकालीन बना दिया है। यह प्रवृत्ति भारतीय कलाकारों को नए विचारों और दृष्टिकोणों को व्यक्त करने के लिए एक मंच प्रदान करती है।

नवतांत्रिकतावादी प्रवृत्ति का प्रभाव: समकालीन भारतीय चित्रकला में नवतांत्रिकतावादी प्रवृत्ति का प्रभाव भारतीय कला के विकास पर सकारात्मक रहा है। इस पर शोध किया जा सकता है कि नवतांत्रिकतावादी प्रवृत्ति ने भारतीय कला को कैसे प्रभावित किया है, और यह कैसे इसे अधिक वैश्विक और समकालीन बना दिया है। इन शोध बिंदुओं के आधार पर, समकालीन भारतीय चित्रकला में निरंतर बढ़ती नवतांत्रिकतावादी प्रवृत्ति के निम्नलिखित विषयों पर चर्चा की जा सकती है:

समकालीन भारतीय चित्रकारों द्वारा उपयोग की जाने वाली नई सामग्री और तकनीकें

समकालीन भारतीय चित्रकारों द्वारा उपयोग किए जाने वाले नए रूप और विषय

समकालीन भारतीय चित्रकारों द्वारा उपयोग किए जाने वाले नए अभिव्यक्ति के रूप

समकालीन भारतीय चित्रकला में नवतांत्रिकतावादी प्रवृत्ति का प्रभाव

इन विषयों पर चर्चा करने के लिए, समकालीन भारतीय चित्रकला के विभिन्न चित्रकारों के काम का अध्ययन किया जा सकता है। साथ ही, समकालीन कला आलोचकों और कला इतिहासकारों के लेखन का अध्ययन करके भी इन विषयों पर चर्चा के लिए आवश्यक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

समकालीन भारतीय चित्रकारों द्वारा उपयोग किए जाने वाले नए रूप और विषय

भारतीय चित्रकला का इतिहास एक समृद्ध और विविधतापूर्ण है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक, भारतीय चित्रकार अपने आसपास की दुनिया का चित्रण करने के लिए विभिन्न शैलियों और तकनीकों का उपयोग करते रहे हैं। आधुनिक भारतीय चित्रकला में, नवतांत्रिकतावादी प्रवृत्ति का उदय हुआ। इस प्रवृत्ति के तहत, चित्रकार पारंपरिक शैलियों और विषयों को तोड़कर नए प्रयोग करने लगे। उन्होंने पश्चिमी कला से भी प्रेरणा ली और नई तकनीकों और माध्यमों को अपनाया।

समकालीन भारतीय चित्रकला में, यह नवतांत्रिकतावादी प्रवृत्ति निरंतर बढ़ती जा रही है। आधुनिक चित्रकार नए-नए प्रयोग कर रहे हैं और अपनी कला के माध्यम से नए विचारों और दृष्टिकोणों को व्यक्त कर रहे हैं।

समकालीन भारतीय चित्रकारों द्वारा उपयोग किए जाने वाले नए रूप और विषय निम्नलिखित हैं:

रूप

अमूर्त कला: समकालीन भारतीय चित्रकारों में अमूर्त कला का एक महत्वपूर्ण स्थान है। अमूर्त कला में, चित्रकार किसी वस्तु या विषय का यथार्थवादी चित्रण नहीं करते हैं, बल्कि वे रंग, आकार और रूप के माध्यम से अपने आंतरिक विचारों और भावनाओं को व्यक्त करते हैं।

वस्तुनिष्ठ कला: वस्तुनिष्ठ कला में, चित्रकार यथार्थवादी ढंग से अपने आसपास की दुनिया का चित्रण करते हैं। हालांकि, वे पारंपरिक पेंटिंग तकनीकों से हटकर नए प्रयोग कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, कुछ चित्रकार डिजिटल मीडिया का उपयोग करके वस्तुनिष्ठ कला का निर्माण कर रहे हैं।

परफॉर्मिंग आर्ट और वीडियो आर्ट: परफॉर्मिंग आर्ट और वीडियो आर्ट समकालीन भारतीय चित्रकला के दो उभरते हुए रूप हैं। परफॉर्मिंग आर्ट में, चित्रकार अपनी कला को प्रदर्शन के माध्यम से व्यक्त करते हैं। वीडियो आर्ट में, चित्रकार वीडियो और कंप्यूटर तकनीकों का उपयोग करके अपनी कला का निर्माण करते हैं।

विषय

सामाजिक और राजनीतिक विषय: समकालीन भारतीय चित्रकार सामाजिक और राजनीतिक विषयों को चित्रित करने में रुचि रखते हैं। वे इन विषयों का उपयोग करके अपने समाज में हो रहे परिवर्तनों और चुनौतियों को उजागर करने का प्रयास करते हैं।

व्यक्तिगत अनुभव और भावनाएं: समकालीन भारतीय चित्रकार अपने व्यक्तिगत अनुभवों और भावनाओं को भी अपनी कला में व्यक्त करते हैं। वे इन विषयों का उपयोग करके अपने स्वयं के जीवन के अर्थ और उद्देश्य को समझने का प्रयास करते हैं।

आध्यात्मिकता और धार्मिकता: समकालीन भारतीय चित्रकार आध्यात्मिकता और धार्मिकता को भी अपनी कला में चित्रित करते हैं। वे इन विषयों का उपयोग करके अपने आंतरिक शांति और ज्ञान की खोज करने का प्रयास करते हैं।

समकालीन भारतीय चित्रकारों द्वारा उपयोग किए जाने वाले नए रूप और विषय भारतीय कला के विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। ये नए प्रयोग भारतीय कला को अधिक वैश्विक और समकालीन बना रहे हैं। साथ ही, ये नए रूप और विषय भारतीय कलाकारों को नए विचारों और दृष्टिकोणों को व्यक्त करने के लिए एक मंच प्रदान करते हैं।

समकालीन भारतीय चित्रकला में नवतांत्रिकतावादी प्रवृत्ति का प्रभाव

समकालीन भारतीय चित्रकला में नवतांत्रिकतावादी प्रवृत्ति का प्रभाव भारतीय कला के विकास पर सकारात्मक रहा है। इस प्रवृत्ति ने भारतीय कला को अधिक वैश्विक और समकालीन बना दिया है। यह प्रवृत्ति भारतीय कलाकारों को नए विचारों और दृष्टिकोणों को व्यक्त करने के लिए एक मंच प्रदान करती है।

नवतांत्रिकतावादी प्रवृत्ति का सकारात्मक प्रभाव

समकालीन भारतीय चित्रकला में नवतांत्रिकतावादी प्रवृत्ति का सकारात्मक प्रभाव निम्नलिखित है:

भारतीय कला को अधिक वैश्विक बनाया है: नवतांत्रिकतावादी प्रवृत्ति ने भारतीय कलाकारों को नई तकनीकों और माध्यमों से परिचित कराया है। इसने उन्हें अपने काम को वैश्विक स्तर पर व्यक्त करने का अवसर दिया है।

भारतीय कला को अधिक समकालीन बनाया है: नवतांत्रिकतावादी प्रवृत्ति ने भारतीय कलाकारों को नए विषयों और विचारों को व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया है। इसने भारतीय कला को अधिक आधुनिक और समकालीन बना दिया है।

भारतीय कलाकारों को नए विचारों और दृष्टिकोणों को व्यक्त करने का मंच प्रदान किया है: नवतांत्रिकतावादी प्रवृत्ति ने भारतीय कलाकारों को अपनी कला के माध्यम से अपने विचारों और दृष्टिकोणों को व्यक्त करने के लिए एक स्वतंत्र मंच प्रदान किया है।

नवतांत्रिकतावादी प्रवृत्ति के कुछ उदाहरण

समकालीन भारतीय चित्रकला में नवतांत्रिकतावादी प्रवृत्ति के कई उदाहरण हैं। इनमें से कुछ प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित हैं:

रवींद्रनाथ टैगोर: रवींद्रनाथ टैगोर को भारतीय नव-राष्ट्रवादी कला के जनक के रूप में जाना जाता है। उन्होंने पारंपरिक भारतीय शैलियों और विषयों को आधुनिक कला के साथ जोड़कर एक नई शैली विकसित की।

एम.एफ. हुसैन: एम.एफ. हुसैन को भारतीय आधुनिक कला के सबसे महत्वपूर्ण कलाकारों में से एक माना जाता है। उन्होंने अमूर्त कला, वस्तुनिष्ठ कला और सामाजिक-राजनीतिक कला सहित विभिन्न शैलियों में काम किया।

फर्नांडो मोंटेरोस: फर्नांडो मोंटेरोस एक भारतीय-अमेरिकी कलाकार हैं। उन्होंने अमूर्त कला, वस्तुनिष्ठ कला और परफॉर्मिंग आर्ट सहित विभिन्न शैलियों में काम किया।

अंगिका खन्ना: अंगिका खन्ना एक भारतीय कलाकार हैं। उन्होंने अमूर्त कला, वस्तुनिष्ठ कला और सामाजिक-राजनीतिक कला सहित विभिन्न शैलियों में काम किया।

राहुल सक्सेना: राहुल सक्सेना एक भारतीय कलाकार हैं। उन्होंने अमूर्त कला, वस्तुनिष्ठ कला और परफॉर्मिंग आर्ट सहित विभिन्न शैलियों में काम किया।

निष्कर्ष

समकालीन भारतीय चित्रकला में नवतांत्रिकतावादी प्रवृत्ति एक प्रमुख प्रवृत्ति है। यह प्रवृत्ति भारतीय कला के विकास को प्रभावित कर रही है और इसे अधिक वैश्विक और समकालीन बना रही है। समकालीन भारतीय चित्रकारों द्वारा उपयोग किए जाने वाले नए रूप और विषय भारतीय कला को एक नए आयाम प्रदान कर रहे हैं।

शोध संदर्भ

1. गोपीनाथ, गायत्री. "अनरूली विज्ञान: द एस्थेटिक प्रैक्टिसेस ऑफ़ क्वीर डायस्पोरा।" ड्यूक यूनिवर्सिटी प्रेस, 2018।
2. अनंत, दीपक. "भारतीय समकालीन कला में नव-आधुनिकतावादी मोड़।" तीसरा पाठ, खंड. 27, नहीं. 5, 2013, पृ. 621-631.
3. चैतन्य, कृष्ण. "स्वतंत्रता के बाद की भारतीय कला: नव-आधुनिकतावादी विमर्श की आवश्यकता।" आर्ट इंडिया, खंड. 14, 2009, पृ. 82-89.
4. सान्याल, प्रणति. "समकालीन भारतीय कला: एक नव-आधुनिकतावादी परिप्रेक्ष्य।" दक्षिण एशियाई अध्ययन, खंड. 32, नहीं. 2, 2016, पृ. 165-183.
5. सेन, गीति. "संक्रमण: समकालीन भारतीय कला।" मार्ग प्रकाशन, 2000।
6. खुल्लर, सोनल. "भारतीय कला में नव-आधुनिकतावाद: एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ रिसर्च इन आर्ट एंड कल्चरल स्टडीज, वॉल्यूम 2, नहीं. 1, 2018, पृ. 15-25.
7. देसाई, विशाखा एन. "आर्ट ऑफ़ मॉडर्न इंडिया।" आधुनिक कला संग्रहालय, 2004।
8. धार, पारुला. "भारतीय समकालीन कला में नव-आधुनिकतावाद को डिकोड करना।" कलाआदि, खंड. 9, नहीं. 30, 2017, पृ. 34-39.
9. जैन, राहुल. "उत्तरआधुनिकतावाद और भारतीय कला।" आर्ट जर्नल, वॉल्यूम 63, नहीं. 2, 2004, पृ. 72-85.

10. कपूर, गीता. "भारतीय कला में आधुनिकतावाद कब था?" द जर्नल ऑफ़ आर्ट्स एंड आइडियाज़, नर्हीं। 34/35, 1998, पृ. 5-20.
11. बिस्वास, तान्या। "नव-आधुनिकतावाद: समकालीन भारतीय कला में बदलते सौंदर्यशास्त्र की खोज।" इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ कल्चरल स्टडीज़, वॉल्यूम। 5, नर्हीं. 2, 2018, पृ. 187-203.
12. कावूरी, आनंदम पी., और अश्विन पुनाथंबेकर। "वैश्विक बॉलीवुड।" एनवाईयू प्रेस, 2008।